गेहूँ और गुलाब

लेखक परिचय – रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म जनवरी सन् 1902 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बचपन में ही आपके माता-पिता का देहान्त हो गया। साहित्य सम्मेलन से विशारद करने के बाद, मैट्रिक परीक्षा में सम्मिलित होने के पूर्व सन् 1920 ई. में असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपकी स्कूली शिक्षा अधूरी रह गई। 'रामचरित मानस' जैसे धार्मिक एवं साहित्यिक ग्रन्थ के पठन-पाठन से आपमें साहित्य एवं काव्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई। साहित्य सेवा के क्षेत्र में आपका पदार्पण पत्रकारिता के माध्यम से हुआ। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही आप पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे। आपने लगभग एक दर्जन पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य किया है, जिसमें तरुण भारत, किसान मित्र, योगी, जनता आदि साप्ताहिक एवं युवक, बालक, लोक संग्रह, कर्मवीर, हिमालय, नईधारा जैसी मासिक पत्रिकाएँ प्रमुख हैं। आपने संगठनात्मक एवं प्रचारात्मक कार्यों द्वारा हिन्दी की बड़ी सेवा की है। आपका नाम बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में लिया जाता है। सन् 1946 से 1950 तक सम्मेलन के प्रधानमंत्री तथा सन् 1951 में सभापति रहे हैं। आपने अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के प्रचारमंत्री का कार्य किया । भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। सन् 1930 से 1942 तक आपके जीवन का महत्वपूर्ण समय जेल यात्राओं में बीता है। सन् 1968 ई. में आपका देहावसान हो गया।

रामवृक्ष बेनीपुरी की प्रतिभा बहुमुखी है। इन्होंने गद्य की विभिन्न विधाओं कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, यात्रा वृत्तांत, ललित निबंध आदि को अपनाकर विपुल मात्रा में साहित्य सर्जना की है। इनके लेखन का एक भाग बाल साहित्य के अन्तर्गत आता है। इसके अतिरिक्त टिप्पणियों, अग्रलेखों के साथ-साथ इन्होंने कतिपय ग्रन्थों का सम्पादन कार्य किया एवं टीकाएँ भी लिखी हैं। इन्होंने साठ से अधिक प्रकाशित-अप्रकाशित कृतियों का प्रणयन किया है। 'माटी की मूरतें', 'पतितों के देश में', 'लालतारा', 'चिता के फूल', 'कैदी की अमर ज्योति', 'सिंहल विजय', 'शकुन्तला', 'रामराज्य', 'गाँव का देवता', 'नेत्रदान एवं नया समाज' नाट्य कृतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त 'विद्यापति की पदावली', 'बिहारी सतसई की सुबोध टीका', 'जयप्रकाश (जीवनी)' और 'वन्देवाणी विनायकौ' (ललितगद्य) विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

एक विशिष्ट प्रकार की अलंकृत भाषा तथा भावुकता प्रधान शैली के कारण हिन्दी गद्य के इतिहास में बेनीपुरी जी का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा-शैली रेखाचित्र एवं संस्मरण के लिए अधिक उपयुक्त है। इसलिए आपको इन विधाओं मे पर्याप्त ख्याति मिली है, इसमें 'माटी की मूरतें' अत्यंत प्रसिद्ध है। आपके रेखाचित्र सामाजिक जीवन तथा व्यक्तियों की सहज, सरल अनुकृति हैं। भाषा' में शब्द चित्रों को अत्यंत सजीव बना दिया है। आपकी रचनाओं में विचारों की गंभीर अभिव्यक्ति तथा चिंतन के लिए ओजपूर्ण अलंकृत भाषा-शैली का प्रयोग होने के कारण उपदेशात्मकता ज्यादा प्रखर हो उठी है।

केन्द्रीय भाव

गेहूँ और गुलाब विचार एवं भाव प्रधान ललित निबंध है। गेहूँ भूख एवं शारीरिक आवश्यकताओं का प्रतीक है तो गुलाब मानसिक तृप्ति और सौन्दर्य बौध का। मनुष्य को शरीर रक्षा के साथ-साथ मानसिक तृप्ति की भी आवश्यकता होती है। गेहूँ तक मानव और पशु में कोई अन्तर नहीं होता। मानसिक वृत्तियों को तरजीह देने के कारण गुलाब मानव को पशु से इतर मानव बनाता है। जब तक मानव जीवन में गेहूँ और गुलाब का सन्तुलन रहता है, वह सुखी और सानन्द होता है। यदि शारीरिक और मानसिक तृप्ति के लिए गुलाब को विलासिता, भ्रष्टाचार, गन्दगी और गलीज का प्रतीक बनाया जाएगा तो महाभारत जैसा सर्वनाश-महानाश होगा। आज मनुष्य शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले साधनों की प्रचुरता से प्रभावित हो रहा है। इससे बचने के लिए दो उपाय हैं – इन्द्रियों का संयमन और वृत्तिओं का उन्नयन अर्थात् स्वस्थ शरीर पर तृप्त मानस की प्रभुता। यहाँ गेहूँ बनाम गुलाब को परस्पर पूरक बनाने की आवश्यकता है। एक दिन आएगा जब गुलाब की रंगीन दुनिया आपका मन मोह लेगी। मानव मन और सुंगधमय होगा, गुलाब की दुनिया स्वर्णिम लोक का आनंद देगी।

गेहूँ और गुलाब

गेहूँ हम खाते हैं, गुलाब सूँघते है। एक से शरीर के पुष्टि होती है, दूसरे से हमारा मानस तृप्त होता है।

गेहूँ बड़ा या गुलाब ? हम क्या चाहते हैं – पुष्ट शरीर या तृप्त मानस ? या पुष्ट शरीर पर तृप्त मानस।

जब मानव पृथ्वी पर आया, भूख लेकर। क्षुधा, क्षुधा, पिपासा, पिपासा। क्या खाए क्या पीए ? माँ के स्तनों को निचोड़ा, वृक्षों को झकझोरा, कीट-पतंग, पशु-पक्षी कुछ न छूट पाए उससे।

गेहूँ – उसकी भूख का काफला आज गेहूँ पर टूट पड़ा है। गेहूँ उपजाओ, गेहूँ उपजाओ, गेहूँ उपजाओ,

मैदान जोते जा रहे हैं, बाग उजाड़े जा रहे हैं – गेहूँ के लिए। बेचारा गुलाब-भरी जवानी में कहीं सिसकियाँ ले रहा है। शरीर की आवश्यकता ने मानसिक कृतियों को कहीं कोने में डाल रखा है, दबा रखा है।

किन्तु चाहे कच्चा चरे या पकाकर खाए-गेहूँ तक पशु और मानव में क्या अन्तर ? मानव को मानव बनाया गुलाब ने। मानव, मानव तब बना, जब उसने शरीर की आवश्यकताओं पर मानसिक वृत्तियों को तरजीह दी।

यही नहीं, जब उसके पेट में भूख खाँव-खाँव कर रही थी , तब भी उसकी आँखें गुलाब पर टँगी थीं।

उसका प्रथम गीत निकला, जब उसकी कामिनियाँ गेहूँ को ऊखल और चक्की में कूट-पीस रही थीं। पशुओं को मारकर, खाकर ही वह तृप्त नहीं हुआ, उनकी खाल का बनाया ढोल और उनके सींग की बनाई तुरही। मछली मारने के लिए जब वह अपनी नाव में पतवार का पंख लगाकर जल पर उड़ा जा रहा था, तब उसकी छप-छप में उसने ताल पाए, तराने छेड़े। बाँस से उसने लाठी ही नहीं बनाई, बंशी भी बजाई।

रात का काला-धुप्प पर्दा दूर हुआ, तब वह उच्छवसित हुआ सिर्फ इसलिए नहीं कि अब पेट-पूजा की समिधा जुटाने में उसे सहूलियत मिलेगी, बल्कि वह आनन्द-विभोर हुआ ऊषा की लालिमा से, उगते सूरज की शनैः-शनैः प्रस्फुटित होने वाली सुनहरी किरणों से, पृथ्वी पर चमचम करते लक्ष-लक्ष ओस-कणों से। आसमान में जब बादल उमड़े तब उनमें अपनी कृषि का आरोप करके ही वह प्रसन्न नहीं हुआ, उसके सौन्दर्य बोध ने उसके मन-मोर को नाच उठने के लिए लाचार किया। इन्द्रधनुष ने उसके हृदय को भी इन्द्रधनुषी रंगों में रंग दिया।

मानव-शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर! पशुओं की तरह उसका पेट और मानस समानान्तर रेखा में नहीं है। जिस दिन वह सीधे तनकर खड़ा हुआ, मानस ने उसके पेट पर विजय की घोषणा की।

गेहूँ की आवश्यकता उसे है, किन्तु उसकी चेष्टा रही है गेहूँ पर विजय प्राप्त करने की। प्राचीन काल के उपवास, व्रत, तपस्या आदि उसी चेष्टा के भिन्न-भिन्न रूप रहे हैं।

जब तक मानव के जीवन में गेहूँ और गुलाब का संतुलन रहा, वह सुखी रहा, सानन्द रहा।

वह कमाता हुआ गाता था और गाता हुआ कमाता था। उसके श्रम के साथ संगीत बँधा हुआ था और संगीत के साथ श्रम।

उसका साँवला दिन में गायें चराता था, रात में रास रचाता था।

पृथ्वी पर चलता हुआ, वह आकाश को नहीं भूला था और जब आकाश पर उसकी नजरें पड़ी थीं, उसे याद था कि उसके पैर मिट्टी पर हैं।

किन्तु प्रतीक बन गया हड्डी तोड़ने वाले, थकाने वाले, उबाने वाले, नारकीय यन्त्रणाएँ देने वाले श्रम का-उस श्रम का, जो पेट की क्षुधा भी अच्छी तरह शांत न कर सके ।

और गुलाब बन गया प्रतीक विलासिता का - भ्रष्टाचार का, गन्दगी और गलीज का ! वह विलासिता - जो शरीर को नष्ट करती है और मानस को भी।

अब उसके साँवले ने हाथ में शंख और चक्र लिए। नतीजा - महाभारत और निजवंश का सर्वनाश।

वह परम्परा चली आ रही है। आज चारों ओर महाभारत है, गृह-युद्ध है-सर्वनाश है, महानाश है।

गेहूँ सिर धुन रहा है खेतों में, गुलाब रो रहा है बगीचों में - दोनों अपने-अपने पालन-कर्ताओं के भाग्य पर, दुर्भाग्य पर-?

चलो, पीछे मुड़ो ! गेहूँ और गुलाब में हम फिर एक बार संतुलन स्थापित करें ?

किन्तु मानव क्या पीछे मुड़ा है, मुड़ सकता है ?

यह महायात्री आगे बढ़ता रहा है, आगे बढ़ता रहेगा।

और, क्या नवीन संतुलन चिरस्थाई हो सकेगा ? क्या इतिहास फिर दुहराकर नहीं रहेगा ?

नहीं, मानव को पीछे मोड़ने की चेष्टा न करो।

अब गुलाब और गेहूँ में फिर सन्तुलन आने की चेष्टा में सिर खपाने की आवश्यकता नहीं।

अब गुलाब गेहूँ पर विजय प्राप्त करे।

गेहूँ पर गुलाब की विजय - चिर-विजय । अब नए मानव की यह नई आकांक्षा हो!

क्या यह संभव है ?

बिल्कुल, सोलह आने संभव है।

विज्ञान ने बता दिया है - यह गेहूँ क्या है? और उसने यह भी जता दिया है कि मानव में यह चिर-बुभुक्षा क्यों है।

गेहूँ का गेहुँत्व क्या है, हम जान गए हैं। यह गेहुँत्व उसमें आता कहाँ से हैं, हमसे यह भी छिपा नहीं है।

पृथ्वी और आकाश के कुछ तत्व एक विशेष प्रक्रिया से पौधों की बालियों में संगृहीत होकर गेहूँ बन जाते हैं। उन्हीं तत्वों की कमी, हमारे शरीर में, भूख नाम पाती है!

क्यों पृथ्वी की जुताई, कुड़ाई, गुड़ाई ? क्यों आकाश की दुहाई ? हम पृथ्वी और आकाश से उन तत्वों को सीधे क्यों नहीं ग्रहण करें ?

यह तो अनहोनी बात-यूटोपिया, यूटोपिया !

हाँ, यह अनहोनी बात, यूटोपिया तब तक बनी रहेगी, जब तक विज्ञान संहार-काण्ड के लिए ही आकाश-पाताल एक करता रहेगा। ज्योंही उसने जीवन की समस्याओं पर ध्यान दिया, यह हस्तामलकवत् सिद्ध होकर रहेगी।

और, विज्ञान को इस ओर आना है, नहीं तो मानव का क्या, सारे ब्रह्माण्ड का संहार निश्चित है।

विज्ञान धीरे-धीरे इस ओर कदम बढ़ा भी रहा है।

कम-से-कम इतना तो वह तुरंत कर ही देगा कि गेहूँ इतना पैदा हो कि जीवन की अन्य परमावश्यक वस्तुएँ-हवा, पानी की तरह इफरात हो जाएँ। बीज, खाद, सिंचाई, जुताई के ऐसे तरीके निकलते ही जा रहे हैं, जो गेहूँ की समस्या को हल कर दें।

प्रचुरता - शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले साधनों की प्रचुरता-की ओर आज का मानव प्रभावित हो रहा है।

प्रचुरता ? - एक प्रश्न चिह्न।

क्या प्रचुरता मानव को सुख और शान्ति दे सकती है ?

'हमारा सोने का हिन्दुस्तान' – यह गीत गाइए, किन्तु यह न भूलिए कि यहाँ एक सोने की नगरी थी, जिसमें राक्षसता वास करती थी। राक्षसता–जो रक्त पीती थी, अभक्ष्य खाती थी, जिसके अकाय शरीर थे, दस सिर थे, जो छह महीने सोती थी, जिसे दूसरे की बहू–बेटियों को उड़ा ले जाने में तनिक भी झिझक नहीं थी।

गेहूँ बड़ा प्रबल है – वह बहुत दिनों तक हमें शरीर का गुलाम बनाकर रखना चाहेगा। पेट की क्षुधा शांत कीजिए, तो वह वासनाओं की क्षुधा जागृत कर आपको बहुत दिनों तक तबाह करना चाहेगा।

तो, प्रचुरता में भी राक्षसता न आवे, इसके लिए क्या उपाय ?

अपनी वृत्तियों को वश में करने के लिए आज का मनोविज्ञान दो उपाय बताता है – इंद्रियो के संयमन का; और वृत्तियों के उन्नयन का।

आज देखिए! गांधी जी के तीस वर्ष के उपदेशों और आदेशों पर चलने वाले हम तपस्वी किस तरह दिन–दिन नीचे गिरते जा रहें हैं।

इसलिए उपाय एकमात्र है – वृत्तियों के उन्नयन का।

कामनाओं को स्थूल वासनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठाकर सूक्ष्म भावनाओं की ओर प्रवृत्त कीजिए।

शरीर पर मानस की पूर्ण प्रभुता स्थापित हो–गेहूँ पर गुलाब की!

गेहूँ के बाद गुलाब – बीच में कोई दूसरा टिकाव नहीं, ठहराव नहीं।

गेहूँ की दुनिया खत्म होने जा रही है– वह स्थूल दुनिया, जो आर्थिक और राजनीतिक रूप से हम सब पर छाई हुई है!

जो आर्थिक रूप में रक्त पीती रही है, राजनीतिक रूप में रक्त की धारा बहाती रही है!

अब वह दुनिया आने वाली है, जिसे हम गुलाब की दुनिया कहेंगे!

गुलाब की दुनिया – मानव का संसार – सांस्कृतिक जगत्।

अहा, कैसा वह शुभ दिन होगा,जब हम स्थूल शारीरिक आवश्यकताओं की जंजीर तोड़कर सूक्ष्म मानव–जगत् का नया लोक बसाएँगे!

जब गेहूँ से हमारा पिण्ड छूट जाएगा और हम गुलाब की दुनिया में स्वच्छंद विहार करेंगे!

गुलाब की दुनिया – रंगों की दुनिया, सुगंधों की दुनिया!

भौंरे नाच रहे, गूँज रहे, फुलसुँघनी फुदक रही, चहक रही!

नृत्य, गीत – आनंद, उछाहे!

कहीं गंदगी नहीं, कहीं कुरूपता नहीं ! आँगन में गुलाब, खेतों में गुलाब! गालों पर गुलाब खिल रहे, आँखों से गुलाब झाँक रहा।

जब सारा मानव–जीवन रंगमय, सुगंधमय, नृत्यमय, गीतमय बन जाएगा। वह दिन कब आएगा ?

वह आ रहा है – क्या आप देख नहीं रहे ? कैसी आँखें है आपकी ! शायद उन पर गेहूँ का मोटा पर्दा पड़ा हुआ है। पर्दे को हटाइए और देखिए वह अलौकिक, स्वर्गिक दृश्य इसी लोक में, अपनी इस मिट्टी की पृथ्वी पर ही !

''शौके दीदार अगर है, तो नजर पैदा कर!''

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. पृथ्वी पर मानव अपने साथ क्या लेकर आया है ?
2. मानव को मानव किसने बनाया ?
3. मानव-जीवन सुखी और आनन्दित कब होता है ?
4. गुलाब किसका प्रतीक बन गया है ?
5. आज का मानव किस परम्परा से प्रभावित है ?
6. कामनाओं को स्थूल वासनाओं के क्षेत्र से ऊपर उठकर हमारी प्रवृत्ति किस ओर होनी चाहिए ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. गेहूँ और गुलाब से मानव को क्या प्राप्त होता है ?
2. मनुष्य पशु से किस प्रकार भिन्न है ?
3. विज्ञान ने गेहूँ के बारे में क्या बतलाया है ?
4. गेहूँ और मानव शरीर का क्या सम्बन्ध है ?
5. वृत्तियों को वश में करने के लिए मनोविज्ञान ने कौन से उपाय बतलाए हैं ?
6. लेखक के अनुसार शुभ दिन का स्वरूप कैसा होगा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'गेहूँ और गुलाब' में लेखक संतुलन क्यों स्थापित करना चाहते हैं ?
2. वृत्तियों के उन्नयन का क्या आशय है ? स्पष्ट कीजिए।
3. 'उसके श्रम के साथ संगीत बँधा हुआ था और संगीत के साथ श्रम' इस पंक्ति का भाव-विस्तार कीजिए।
4. निम्नलिखित अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   ''मानव शरीर में पेट का स्थान नीचे है, हृदय का ऊपर और मस्तिष्क का सबसे ऊपर। पशुओं की तरह उसका पेट और मानस समानान्तर रेखा में नहीं है।''
5. रामवृक्ष बेनीपुरी का भाषा - शैली पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा अध्ययन -

1. पाठ में आए हुए इन सामासिक शब्दों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए-
   सौंदर्यबोध, मन-मोर, गृह-युद्ध, कीट-पतंग, इन्द्रधनुष
2. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए - कच्चा, शारीरिक, मानसिक, भ्रष्टाचार

ध्यान से पढ़िए -

शुभम् के बड़े भाई अशोक राजनगर में रहते हैं।[1] शुभम् उनसे मिलने राजनगर गया। अचानक शुभम् को देखकर अशोक ने कहा- अरे! शुभम् तुम![2] शुभम् ने बताया कि आपसे मिलने का मन हुआ तो चला आया। अशोक ने पूछा- क्या तुम आज ही वापस जाओगे?[3] शुभम ने उत्तर दिया-मैं आज नहीं जाऊँगा[4] अशोक ने कहा- ठीक है। शायद आज मैं देर से लौटूँ ।[5] तुम बाजार चले जाओ ।[6] लो ये पैसे, माया के लिए एक अच्छा सूट खरीद लेना।

अशोक ने शुभम् के साथ भोजन किया और अपने काम पर चला गया। शुभम् बाजार गया। उसने एक छोर से दूसरे छोर तक बाजार का चक्कर लगाया किन्तु उसे कपड़ों की कोई अच्छी दुकान दिखाई नहीं दी। आखिरकार एक कोने में उसे कपड़े की एक दुकान नजर आई। उसने वहाँ से माया के लिए एक सूट खरीदा और लौट आया। शाम को अशोक ने बताया कि कल उसकी छुट्टी रहेगी। शुभम् ने उसे अपना लाया हुआ सूट दिखाया। अशोक ने कहा–मैं चाहता हूँ कि मैं भी कल तुम्हारे साथ ही घर चलूँ।[7] मेरे साथ ढेर सारा सामान है। अगर तुम मेरे साथ रहोगे तो मुझे सुविधा होगी।[8] शुभम् ने कहा–कल हम साथ ही घर चलेंगे।

अभी आपने यह गद्यांश पढ़ा। इस गद्यांश में कई परस्पर सम्बद्ध सार्थक शब्द समूह हैं। ऐसा सार्थक शब्द समूह जो व्यवस्थित हो तथा पूरा आशय प्रकट करता हो, वाक्य कहलाता है, जैसे–शुभम् के बड़े भाई अशोक राजनगर में रहते हैं। यह शब्द समूह सार्थक है, व्याकरण के नियमों के अनुरूप व्यवस्थित है तथा पूरा आशय प्रकट कर रहा है। अतः यह एक वाक्य है।

आरंभ में दिए गए गद्यांश को ध्यान से पुनः पढ़िए; और रेखांकित शब्दों में लिखे वाक्यों को देखिए। रेखांकित वाक्य अर्थ की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न हैं। सामान्यतः वाक्य भेद दो दृष्टियों से किया जाता है –

1. अर्थ की दृष्टि से **2. रचना की दृष्टि से।**

1. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्यों के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं–

- **विधानवाचक वाक्य** – जिन वाक्यों से किसी क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं। किसी के अस्तित्व का बोध भी इस प्रकार के वाक्यों से होता है; जैसे –

  अशोक राजनगर में रहता है।

- **निषेधवाचक वाक्य** – जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध होता हो, उन्हें निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। इन्हें नकारात्मक वाक्य भी कहते हैं; जैसे –

  मैं आज नहीं जाऊँगा।

- **प्रश्नवाचक वाक्य** – जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाए अर्थात् किसी से कोई बात पूछी जाए, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे –

  क्या तुम आज ही वापस जाओगे?

- **विस्मयादिवाचक वाक्य** – जिन वाक्यों से आश्चर्य (विस्मय), हर्ष, शोक, घृणा आदि के भाव व्यक्त हों, उन्हें विस्मयादिवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

  अरे! शुभम् तुम!

- **आज्ञावाचक वाक्य** – जिन वाक्यों से आज्ञा या अनुमति देने का बोध हो,उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे –

  तुम बाजार चले जाओ।

- **इच्छावाचक वाक्य** – वक्ता की इच्छा, आशा या आशीर्वाद को व्यक्त करने वाले वाक्य इच्छावाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे–

  मैं चाहता हूँ कि मैं भी कल तुम्हारे साथ ही घर चलूँ।

- **संदेहवाचक वाक्य** – जिन वाक्यों में कार्य के होने में सन्देह अथवा संभावना का बोध हो, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे–

  शायद मैं देर से लौटूँ।

- **संकेतवाचक वाक्य** – जिन वाक्यों से एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। इन्हें हेतुवाचक वाक्य भी कहते हैं। इनसे कारण, शर्त आदि का बोध होता है; जैसे –

  अगर तुम मेरे साथ रहोगे तो मुझे सुविधा होगी।

वाक्य परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन

आप पढ़ चुके हैं कि अर्थ की दृष्टि से वाक्य आठ प्रकार के होते हैं। इनमें से विधानवाचक वाक्य को मूल आधार माना जाता है। अन्य वाक्य भेदों में विधानवाचक वाक्य का मूलभाव ही विभिन्न रूपों में परिलक्षित होता है। किसी भी विधानवाचक वाक्य को सभी प्रकार के भावार्थों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

जैसे-

1.	विधानवाचक वाक्य	-	अशोक राजनगर में रहता है।
2.	विस्मयादिवाचक वाक्य	-	अरे! अशोक राजनगर में रहता है!
3.	प्रश्नवाचक वाक्य	-	क्या अशोक राजनगर में रहता है?
4.	निषेधवाचक वाक्य	-	अशोक राजनगर में नहीं रहता है।
5.	संदेहवाचक वाक्य	-	शायद अशोक राजनगर में रहता है!
6.	आज्ञावाचक वाक्य	-	अशोक, तुम राजनगर में रहो।
7.	इच्छावाचक वाक्य	-	काश, अशोक राजनगर में रहता।
8.	संकेतवाचक वाक्य	-	यदि अशोक राजनगर में रहना चाहता है तो रह सकता है।

योग्यता विस्तार

1. जीवन में सौंदर्य और कला की आवश्यकता सम्बन्धी एक आलेख तैयार कीजिए।
2. विज्ञान ने हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कौन-कौन सी सामग्री प्रदान की है। भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं के लिए सामग्रियों की सूची तैयार कीजिए ।
3. एक अच्छा विद्यार्थी बनने के लिए किन-किन गुणों का होना आप आवश्यक समझते हैं? अपने सुझाव लिखिए ।
4. कम से कम 5 प्रकार के अनाजों को एकत्रित करिए, तथा उन अनाजों के विषय में सम्पूर्ण जानकारी लिपिबद्ध करिए जैसे वह कब बोई जाती है, कब काटी जाती है आदि।

शब्दार्थ

पुष्ट = दृढ़, पक्का, मजबूत। **तृप्त** = संतोष। **क्षुधा** = भूख। **कामिनी** = सुन्दर स्त्री। **समिधा** = हवन में जलाने की लकड़ी। **प्रस्फुटित** = खिली हुई। **काफिला** = यात्रियों का दल। **तरजीह** = महत्व। **गलीज** = गंदा, मैला। **इफरात** = बहुत अधिक। **दीदार** = दर्शन, देखा-देखी। **यंत्रनाएँ** = कष्ट,पीड़ा। **वासनाएँ** = इच्छाएँ। **ऊषा** = प्रातः। **हस्तामलकवत्** = हथेली पर रखे हुए आँवले के समान। **अभक्ष्य** = जो खाने योग्य न हो। **अकाय** = जिसकी काया या शरीर न हो। **उन्नयन** = उन्नति।